सूरह — एक कहानी

सूरह अस-सफ़्फ़

सफ़ें

पूरा सफ़र — अल्फ़ाज़, सफ़ें, और जीतने वाला सौदा —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 61 • 14 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या अय्युहल्-लज़ीन आमनू लिम तक़ूलून मा ला तफ़्अ'लून
2. ऐ ईमान वालो! तुम क्यों कहते हो जो करते नहीं?

इन्नल्-लाह युहिब्बुल्-लज़ीन युक़ातिलून फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न क-अन्नहुम बुन्यानुम्-मर्सूस
4. बेशक अल्लाह उन लोगों से मोहब्बत करता है जो उसकी राह में सफ़ें बाँध कर लड़ते हैं, गोया वो सीसा-पिलाई हुई दीवार हों।

युरीदून लि-युत्फ़िऊ नूरल्-लाहि बि-अफ़्वाहिहिम
8. वो चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह से बुझा दें।

हल अदुल्लुकुम 'अला तिजारतिन तुन्जीकुम मिन 'अज़ाबिन अलीम
10. क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊँ जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले?

व उख़्रा तुहिब्बूनहा नस्रुम्-मिनल्-लाहि व फ़त्हुन क़रीब
13. और एक और चीज़ जो तुम चाहते हो: अल्लाह की तरफ़ से मदद और क़रीब फ़तह।

या अय्युहल्-लज़ीन आमनू कूनू अन्सारल्-लाह
14. ऐ ईमान वालो! अल्लाह के मददगार बन जाओ।

हर चीज़ पहले से उसकी तस्बीह कर रही है

बेटा, ये सूरह उन सूरहों के ख़ानदान से है जो तस्बीह से खुलती हैं — '**सब्बह लिल्लाहि मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़**' — जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह की तस्बीह करता है, और वो ग़ालिब, हिकमत वाले हैं।

वो माहौल महसूस कीजिए जो ये एक हुक्म आने से पहले बनाती है। सितारे अपने मदारों में, लहरें आती हुई, चींटी अपना दाना उठाती हुई, बारिश उस खेत पर बरसती जो किसी इंसान की मिल्कियत नहीं — ये सब पहले से अल्लाह की ख़िदमत में हैं, बिना बहस के, बिना देर के इताअत करते हुए। और फिर सूरह **हम** की तरफ़ मुड़ती है — वो वाहिद मख़लूक़ जो इताअत के **बारे में बात** करती है — और वो सवाल पूछती है जो इस सूरह को उसकी आग देता है।

क्योंकि यही सूरह का पूरा मौज़ू है, बेटा: **मख़लूक़ ख़ामोशी से इताअत करती है; इंसान ज़ोर से बोलता है।** दोनों कहाँ मिलते हैं? उस शख़्स में जो कहता **है** और करता भी है।

वो खाई जिसे अल्लाह नफ़रत करते हैं

पस-मंज़र, बेटा, जैसा उलमा-ए-तफ़्सीर बयान करते हैं: कुछ मोमिनीन कहा करते थे — काश हमें मालूम हो जाता कि अल्लाह को सबसे महबूब अमल कौन सा है, तो हम अपना माल और अपनी जानें उस में लगा देते! ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़, ख़ुलूस से कहे गए। फिर हुक्म आए, और जिहाद फ़र्ज़ किया गया — और वही कुछ ज़ुबानें ख़ामोश हो गईं, और कुछ क़दम भारी हो गए।

और ये आयतें नाज़िल हुईं, और ये हर नस्ल को बराबर चुभती हैं: '**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू, लिम तक़ूलून मा ला तफ़्अ'लून** — ऐ ईमान वालो! तुम **क्यों** कहते हो जो **करते** नहीं? **कबुर मक़्तन 'इंदल्लाहि अन तक़ूलू मा ला तफ़्अ'लून** — अल्लाह के हाँ सबसे **ज़्यादा नफ़रत** की बात ये है कि तुम कहो जो करते नहीं।'

उस लफ़्ज़ को तौलो, बेटा — 'कबुर **मक़्तन**'। मक़्त सिर्फ़ नाराज़गी नहीं; ये गहरी, फूली हुई नफ़रत है। अल्लाह ने ये नहीं कहा 'ये एक कमज़ोरी है' या 'ये एक कोताही है'। उन्होंने उसे उन चीज़ों में शुमार किया जिनसे उन्हें सबसे ज़्यादा नफ़रत है। इतनी सख़्ती क्यों? क्योंकि **ज़ुबान और आ'ज़ा के दरमियान की खाई वही दरार है जिसमें मुनाफ़िक़त उगती है।** एक मोमिन जिसके अल्फ़ाज़ उसके अमल से आगे निकल जाएँ वो एक ऐसा घर बना रहा है जिसके नीचे दरार की लकीर है — और जिस दीन की वो बात करता है वो, लोगों की नज़र में, एक ऐसी चीज़ बन जाता है जिसकी मर्द बात करते हैं मगर जीते नहीं।

तो आईना क़रीब रखिए, बेटा। वो बाप जो नमाज़ पर लेक्चर देता है और अपनी नमाज़ टालता है। वो मशवरा देने वाला जिसका मशवरा कभी उसके अपने घर नहीं जाता। वो जो ऑनलाइन रिमाइंडर्स पोस्ट करता है जब कि उसके ज़ाती घंटे उनका इनकार

करते हैं। वो तालिब-ए-इल्म जो सौवीं बार कहता है 'मैं कल से शुरू करूँगा।' **ये आयत हमें कम भलाई बोलने को नहीं कहती — ये हमें अपने ही अल्फ़ाज़ तक पहुँचने को कहती है। कहो, फिर उसके पीछे दौड़ो।**

वो दीवार जिसे अल्लाह मोहब्बत करते हैं

और फ़ौरन, सूरह उसका उल्टा दिखाती है — वो जिसे अल्लाह **मोहब्बत** करते हैं: '**इन्नल्लाह युहिब्बुल्-लज़ीन युक़ातिलून फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न** — अल्लाह उन लोगों से मोहब्बत करता है जो उसकी राह में **सफ़ें** बाँध कर लड़ते हैं — **क-अन्नहुम बुन्यानुम्-मर्सूस** — गोया वो एक **सीसा-पिलाई हुई (मज़बूत) दीवार** हों।'

तस्वीर देखिए, बेटा। बिखरे हुए हीरो नहीं जो अलग अलग सिम्तों में चढ़ाई कर रहे हों, हर एक अपनी बहादुरी पर ख़ुद रीझ रहा हो। **ईंटें।** हर एक अपनी मुक़र्रर जगह थामे हुए; हर एक अपने बग़ल वाली को मज़बूत करती हुई; दुश्मन के दाख़िल होने के लिए कोई दरार नहीं; कोई एक ईंट पूरी दीवार होने का दावा नहीं करती। 'मर्सूस' — अरब इसे उन पत्थरों के लिए इस्तेमाल करते थे जो पिघले सीसे से इतने कस कर जोड़े गए हों कि उनके दरमियान से हवा न गुज़र सके।

और ये डिज़ाइन, बेटा, सिर्फ़ मैदान-ए-जंग के लिए नहीं। ये **मस्जिद की सफ़** का डिज़ाइन है — इसी लिए नबी ﷺ अपने हाथों से सफ़ें सीधी करते और ख़बरदार करते कि सफ़ों में ख़ालियाँ शैतान के लिए ख़ालियाँ हैं। ये एक **ख़ानदान** का डिज़ाइन है, जहाँ हर फ़र्द दूसरे की कमज़ोरी ढाँप लेता है। ये एक टीम, एक मस्जिद कमेटी, एक कम्युनिटी प्रोजेक्ट का डिज़ाइन है। **हर ग्रुप में जिसमें आप हों अपने आप से पूछिए: क्या मैं एक ईंट हूँ अपनी जगह थामे — या एक ढीला पड़ा पत्थर अपने आप पर रीझता हुआ?**

दो नबी, एक शिकायत

फिर सूरह हमारे सामने दो आईने रखती है, हम से पहले गुज़री दो बड़ी क़ौमों से।

पहले, **मूसा (अलैहि0)**, अपनी क़ौम से कहते हुए: '**या क़ौमि, लिम तु'ज़ूननी** — ऐ मेरी क़ौम, तुम मुझे **क्यों सताते** हो, जब कि तुम **जानते** हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ?' बेटा, इसमें छुपी उदासी महसूस कीजिए: **वो जानते थे।** उनका दुख जहालत न था; ये जानना था, और फिर भी उन्हें सताना। और फिर होला देने वाला नतीजा: 'तो जब वो **टेढ़े** हो गए, अल्लाह ने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया।' **हिदायत एक तोहफ़ा है, बेटा — जब कोई शख़्स बार बार अपने दिल को चुनाव से फेर लेता है, अल्लाह उस फेरने की तस्दीक़ कर देते हैं।** जो नूर आपको दिया गया उस से कभी मत खेलो।

दूसरे, **ईसा (अलैहि0)**, मरयम के बेटे, कहते हुए: 'ऐ बनी इसराईल, मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, अपने से पहले वाली तौरात की तस्दीक़ करता हुआ — और एक आने वाले रसूल की ख़ुशख़बरी देता हुआ, जिसका नाम **अहमद** है।' हमारे नबी ﷺ का नाम, एक पहले नबी का एलान किया हुआ, उनकी पैदाइश से सदियों पहले। **अंबिया एक ही क़ाफ़िला हैं, बेटा** — हर एक अगले की तरफ़ इशारा करता हुआ, कोई दूसरे से मुक़ाबला नहीं करता। मगर जब अहमद ﷺ खुली दलीलों के साथ आए, कुछ ने कहा: 'ये तो खुला जादू है।'

और जो लोग नूर से लड़ते हैं, सूरह उनपर एक मशहूर फ़ैसला सुनाती है: '**वो चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह से बुझा दें** — मगर अल्लाह अपना नूर मुकम्मल कर के रहेगा, चाहे मुनकिरों को कितना ही बुरा लगे।' **सूरज पर फूँक मारना, बेटा। ** चौदह सदियों से मुँह फूँक चुके हैं; अज़ान अभी भी हर बर्र-ए-आज़म पर दिन में पाँच बार बुलंद होती है।

वो सौदा जिसका मुनाफ़ा यक़ीनी है

और अब, बेटा, वो हिस्सा जो इस सूरह को हर मोमिन का महबूब बनाता है — ख़ुद अल्लाह, तमाम ख़ज़ानों के मालिक, एक ताजिर की तरह बाज़ार में पुकारते हुए एक पेश-कश देते हुए: '**हल अदुल्लुकुम 'अला तिजारतिन तुन्जीकुम मिन 'अज़ाबिन अलीम** — क्या मैं तुम्हें एक ऐसी **तिजारत** बताऊँ जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से

बचा ले?'

उनकी नरमी ग़ौर कीजिए, बेटा। वो हुक्म दे सकते थे; इसके बजाय वो **दावत** देते हैं, और उसे **तिजारत** कहते हैं — क्योंकि तिजारत का मतलब है दोनों तरफ़ फ़ायदा। एक तिजारत को क्या चाहिए? एक सरमाया-कारी, और एक मुनाफ़ा। दोनों पढ़िए।

सरमाया-कारी: 'तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और अल्लाह की राह में अपने **माल** और अपनी **जानों** से जद्दो-जहद करो। ये तुम्हारे लिए बेहतर है, काश तुम जानते।'

मुनाफ़ा: 'वो तुम्हारे **गुनाह बख़्श** देगा, और तुम्हें उन **बाग़ों** में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, और हमेशगी के बाग़ों में **पाक घरों** में। **यही** बड़ी कामयाबी है।'

बेटा, इस सौदे को तौलिए: आप एक ऐसा माल देते हैं जो वैसे भी छूट जाएगा — पैसा जो वारिसों को चला जाएगा, और एक जिस्म जो मिट्टी में लौटेगा — और आप ऐसी चीज़ पाते हैं जो कभी ख़त्म नहीं होती। **कोई ताजिर ऐसा सौदा ठुकरा नहीं सकता, अगर वो हिसाब सचाई से लगाए।**

और फिर, बेटा, इसी सौदे में अल्लाह एक **बोनस** जोड़ देते हैं — और वो जानते हैं कि इंसानी दिल क्या चाहता है: '**व उख़्रा तुहिब्बूनहा** — और एक और चीज़ जिसे तुम **चाहते** हो — **नस्रुम्-मिनल्लाहि व फ़त्हुन क़रीब** — अल्लाह की तरफ़ से **मदद** और एक **क़रीब फ़तह**। **व बश्शिरिल्-मु'मिनीन** — और मोमिनीन को ख़ुशख़बरी दे दीजिए।'

देखिए ये कितना शफ़ीक़ है। अल्लाह जानते हैं कि हम इंसान हैं — कि हमें एक दूर का वादा चाहिए, हाँ, मगर हमारा दिल इस दुनिया में भी कुछ राहत चाहता है। तो वो फ़रमाते हैं: **और एक और चीज़, जिसे तुम पसंद करते हो** — मदद, अभी; फ़तह, क़रीब। बेटा, वो हमारी फ़ितरत को ठुकराते नहीं; वो उसे पूरा करते हैं।

अल्लाह के मददगार बन जाओ

और सूरह अपने आख़िरी हुक्म पर पहुँचती है, बेटा — और इसका पस-मंज़र इसे न-भूलने वाला बना देता है: '**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू कूनू अन्सारल्लाह** — ऐ ईमान वालो! **अल्लाह के मददगार** बन जाओ — **कमा क़ाल 'ईसब्नु मरयम लिल्-हवारिय्यीन मन अन्सारी इलल्लाह** — जैसे ईसा इब्ने मरयम ने हवारियों से कहा था: **कौन है जो अल्लाह की तरफ़ मेरा मददगार बने?** — **क़ालल्-हवारिय्यून नह्नु अन्सारुल्लाह** — हवारियों ने कहा: **हम अल्लाह के मददगार हैं। **'

बेटा, उस लम्हे का तसव्वुर कीजिए। एक नबी, तक़रीबन अकेले, एक दुश्मन क़ौम के दरमियान खड़े हो कर पूछते हैं: **कौन है मेरे साथ?** और मुट्ठी भर आम लोग — मछुआरे, मज़दूर, कोई सरदार नहीं — आगे बढ़ कर कहते हैं: **हम।**

और ग़ौर कीजिए अल्लाह हमें ये सवाल कैसे देते हैं: वो नहीं कहते 'मुझे तुम्हारी ज़रूरत है' — वो हर चीज़ से बे-नियाज़ हैं। ये **इज़्ज़त** की पेश-कश है: **मेरे काम में शामिल हो जाओ ताकि तुम्हारा नाम भी उसमें लिख दिया जाए।** बेटा, अल्लाह का दीन आपके बग़ैर भी क़ायम रहेगा; सवाल ये है कि क्या **आप** उसमें शामिल थे।

'तो बनी इसराईल में से एक गिरोह ईमान ले आया और एक गिरोह ने इनकार किया। **फ़-अय्यद्नल्-लज़ीन आमनू 'अला 'अदुव्विहिम फ़-अस्बहू ज़ाहिरीन** — तो हमने उन लोगों की जिन्होंने ईमान लाया, उनके दुश्मन के मुक़ाबले में **ताईद** की, और वो **ग़ालिब** हो गए।'

बेटा, ये आख़िरी लाइन इस सूरह का पूरा नतीजा है: **जो अल्लाह का मददगार बनता है, अल्लाह उसका मददगार बन जाता है।** और देखिए ये सूरह कहाँ से शुरू हुई थी — उन लोगों से जिनके अल्फ़ाज़ उनके अमल से आगे थे — और कहाँ ख़त्म होती है: उन लोगों पर जिन्होंने कहा 'हम' और फिर वाक़ई खड़े हो गए।

तो हर सुबह अपने आप से यही पूछिए, बेटा: **आज मैं किस चीज़ में उसका मददगार हूँ?** एक नमाज़ जो क़ायम की, एक ज़ुबान जो रोकी, एक हक़ जो अदा किया, एक

इंसान जिसे उसकी तरफ़ एक क़दम क़रीब किया। और फिर उसे कह देने पर मत रुकिए — **कर दीजिए।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. सारी मख़लूक़ ख़ामोशी से इताअत करती है; इंसान की आज़माइश ये है कि उसके अल्फ़ाज़ और अमल एक हो जाएँ।

2. जो कहा और किया नहीं गया, अल्लाह के हाँ वो सबसे ज़्यादा नफ़रत की चीज़ों में है — कम मत बोलिए, बल्कि अपने अल्फ़ाज़ तक पहुँचिए।

3. 'बुन्यानुम्-मर्सूस' बनिए: अपनी जगह थामे एक ईंट, अपने बग़ल वाले को मज़बूत करती हुई — सफ़ की ख़ालियाँ शैतान की ख़ालियाँ हैं।

4. हिदायत के साथ मत खेलिए — जब इंसान बार बार टेढ़ा होता है, अल्लाह उस टेढ़ेपन की तस्दीक़ कर देते हैं।

5. नूर को मुँह से बुझाने की हर कोशिश सूरज पर फूँक मारना है।

6. उस तिजारत का हिसाब लगाइए: वो देना जो वैसे भी छूट जाएगा, उस के बदले जो कभी ख़त्म नहीं होता — और उसमें मदद और क़रीब फ़तह का बोनस भी है।

7. रोज़ पूछिए: 'आज मैं किस चीज़ में अल्लाह का मददगार हूँ?' — जो उसका मददगार बनता है, वो उसका मददगार बन जाता है।

या अल्लाह, हमारे अल्फ़ाज़ को हमारे अमल का सच्चा बना दीजिए, हमें अपनी सफ़ों में एक मज़बूत ईंट बना दीजिए, और हमें अपने अंसार में शामिल फ़रमाइए। आमीन।